[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3639

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकला में रंग (विशेष संदर्भ अजन्ता)

डॉ सीमा शर्मा एम. एल. बी. कॉलेज इन्दौर
प्रिया दत्त उपाध्याय (डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उ0प्र0)

"Colour is the property of light rather than of bodies. It is not an entity but a sensation conveyed to the mind through media of the eyes." - F.A. Taylor*1

मानव जीवन में रंग का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक वस्तु कोई न कोई रंग लिए है। वस्तुओं के धरातल मे रंग होने के कारण ही वह हमें दिखाई देती है। धरातलों पर प्रकाश की मात्रा कम अथवा अधिक होने से एक ही रंग की वस्तुयें अलग–अलग दिखाई देती हैं। एक ही वस्तु बन्द कमरे में, धूप में तथा विभिन्न ऋतुओं में अथवा विभिन्न स्थानों पर प्रकाश की मात्रा तथा वातावरण के कारण रंग व्यवस्था की एक रंगत होते हुये भी भिन्न दिखाई देगी। रंगों के प्रति मानव का आकर्षक कभी नहीं घटा है क्योंकि रंग आकर्षक का एक माध्यम है। इसलिये तो आदिवासियों से लेकर आधुनिक मानव तक ने सौन्दर्य के विकास में रंग का सहारा लिया है। भारतीय चित्रों में छाया प्रकाश की बहुत उपेक्षा रहती है। प्रायः सपाट रंग ही भरे जाते हैं। कहीं–कहीं उभार दिखाने के लिये किनारों पर गहरे रंग का (जैसे स्तनों में) प्रयोग कर लेते है। कमरे को रंग व्यवस्था से लकर बाग, बगीचों में फूल – पौधो की रंग योजना तक में उसने अपना हस्तक्षेप किया है क्योंकि रंगों का अपना एक प्रभाव होता है जो मानव की मानसिक भावनाओं को विचलित करने की शक्ति रखता है। रंग में वह गुप्त ऊर्जा छिपी होती है कि वह एक अनन्त गतिशीलता प्रदान कर सकती है।

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक की रंग व्यवस्था में परिवर्तन होता आया है। प्रागैतिहासिक काल से द्वितीय शती ई0 पू0 में भित्त चित्रण पर कार्य हुआ है। भित्ति चित्रण चित्रकला की वह विद्या है जिसका सम्बन्ध भवनों की दीवारों तथा छतों के अलंकरण से है। प्रागैतिहासिक काल के मानव खुले जंगलों में या नदी – घाटियों में पत्थर के औजारों से शिकार करता हुआ जीवन निर्वाह करता था। उसके बाद वह नदी द्रोणियों में जल की सुविधा, देखकर वही प्राकृतिक कन्दराओं में रहने लगा। इन्हें लोक भाषा में आज भी दरी कहते हैं, जैसे मिर्जापुर जिले में लिखुनिया दरी। 'इन कन्दरकाओं की भीतों पर लाल गेरू या धाऊ पत्थर से बनाये हुये बहुत से रेखाचित्र पाए गए है। जिन्हें लोक भाषा में "रकत की पुतरियाँ"2 भी कहा जाता है।' ये मुख्यतः चार स्थानों पर मिले है– मध्यप्रदेश में महादेव पहाड़ी के पंचमढ़ी नामक स्थान के इर्द गिर्द। ये चित्र एक के ऊपर एक तह के रूप में मिले है।

दूसरा मध्यप्रदेश के रायगढ़ के समीप, तीसरा मिर्जापुर क्षेत्र के कई स्थानों पर रकत की पुतरियाँ प्राप्त हुई तथा चौथा बादा जिले के मानिकपुर स्थान में। इस समय काल के कुछ चित्र बहुत प्रसिद्व जैसे हैं जैसे घरेलू जन–जीवन पर आधारित, सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है। जिससे आखेट के दृश्य, शहद एकत्रित करते हुये, घुड़सवार योद्धा, सैनिक आदि इन चित्रों के रंग कुछ सफेद काले हैं जिन्हें बाहर से लाल रंग की रेखा से आकृतिबद्ध किया गया है।लाल रंग के प्रयोग के लिये गेरू, हिरौंजी पीले रंग के लिये रामरज, प्योडी और सफेद रंग के लिये खड़िया चुना आदि का प्रयोग करते थे। इन रंगों को स्थाई करने के लिये इनमे चर्बी मिलाकर प्रयोग किया जाता था। प्रागैतिहासिक काल के बाद सिन्धु घाटी की सभ्यता का जन्म हुआ। इसकी खोज सन् 1924 में हुई और इसका श्रेय 'सर जान मार्शल' तथा डॉ0 असनेन्ट मैक को दिया जाता है। सिन्धु घाटी के विशाल क्षेत्र में काली एवं लाल पकाई मिट्टी के बर्तन बनाने की कला का विकास हुआ। इन बर्तनों पर मानवाकृतियाँ, वनस्पति, पशु – पक्षी तथा ज्यामितीय, गोल, अर्धचन्द्राकार व तिरछी रेखाओं के आलेखनों का प्रयोग है। इसमें लाल काले, सफेद रंग का प्रयोग हुआ। मिट्टी के जो बर्तन लाल रंग से बने थे उन पर चित्रकारी काले रंग से की गयी थी और काले बर्तनों पर सफेद रंग से चित्रकारी की थी। इसमें लाल रंग गेरू, काला रंग काजल और कोयले से बनाया और सफेद रंग खड़िया चूने से बना हुआ था।

वहीं दूसरी तरफ दक्षिण में उपस्थित अजन्ता एलोरा और ऐलीफेन्टा गुफाओं में भित्ति चित्रण का एक अनूठा संगम है। जिनमें अजन्ता विश्व विख्यात है। अजन्ता के 'तीस गुफा मन्दिर' पहाड़ियों को काट कर बनाये गये हैं। यह महाराष्ट्र के औरंगावाद जिले से 100 किमी. दूर स्थित है अजन्ता की गुफाऐं हरियाली से परिपूर्ण एक घाटी में स्थित हैं। सतपुड़ा की पहाड़ी से निकली बघोरा नदी बहती है। यहाँ का वातावरण शान्त और नीरव है। इसी काल से प्रभावित होकर बौद्व भिक्षुओं ने इसे अपनी कला और साधना के लिये उपयुक्त स्थान समझा। अजन्ता की प्रत्येक गुफा में मूर्तियाँ, स्तम्भ तथा द्वार काटे गये है और भित्तियों पर चित्रकारी की गयी है। इस प्रकार अजन्ता की ये गुफाऐं वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला का परिपूर्ण संगम है। अजन्ता की इतनी महत्वपूर्ण कलाकृतियों एक समय बिल्कुल अंधेरे में थी। इसकी खोज लेफ्टीनेन्ट जेम्स ई0 अलेक्जेन्डर ने की थी। ये अफसर शिकार की

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

टोह में अजन्ता गांव के पास पहुँचे थे। उन्हें एक जानवर की आवाज प्रतीत हुई। उसे देखने के लिये जब वे गये तो वहाँ कोई जानवर नहीं था बल्कि उन्हें पेड़ों के बीच बैगनी पत्थरों के खम्भों के मध्य सुनहरे लाल रंग में कुछ ऐसी चीज थी, जिसे देख अफसर चौक गये और उन्होनें उसे देखा वहाँ तक पहुँचने का रास्ता साफ हुआ और कला जगत व कला मर्मज्ञों के लिये बौद्ध कमला की महान उपलब्धि से परिचय हुआ।

भारत में बौद्ध कला की महान विरासत भित्ति चित्रों के रूप में सुरक्षित है। इन भित्ति चित्रों का विस्तार भारत में सर्वत्र मिलता है। अजन्ता के भित्ति चित्र का एक दृश्य अंकित है। गुफा संख्या–1 में 'बोधिसत्व पदमपाणि' का चित्र है।

गुफा संख्या–1 'बोधिसत्व पदम्पाणि'

अजन्ता के चित्रों का धरातल तैयार करने के लिये सर्वप्रथम प्लास्टर की पर्त में खड़िया चूना, गोब का बारीक गारा गुफा की खुरदरी दीवार लगा दिया जाता था। इस गारे को कई दिन तक अलसी के पानी में भी भिगो कर फूलने के लिये रख दिया जाता था। कभी– कभी छत में लगाने वाले गारे में धान की भूसी मिलाने का भी प्रचलन था। प्लास्टर की पहली तह पौन इचं से लेकर एक इंच तक मोटी होती थी, जिसके ऊपर अंडे के छिलके की मोटाई के बराबर सफेद प्लास्टर का लेप चढ़ा दिया जाता था। इस प्रकार प्रत्येक गुफा को प्लास्टर से ओपा जाता था। फिर उसके ऊपर चित्रण होता था। इससे गुफा की चट्टानी दीवारों के छिद्र भर जाते थे और दीवार चित्रण के लिये समतल हो जाती थी। ई0 वी0 हेविल का मत है कि अजन्ता चित्र पूर्ण हो जाने पर जब सूख जाते थे तो चित्र में अत्यधिक प्रकाश को उभारने के लिये टेम्परा रंग से चित्रण किया जाता था। अजन्ता के रंग विधान में टेम्परा पद्धति के रंगों का प्रयोग किया गया है। जिसमें खनिज, रासायनिक तथा वनस्पतिक रंगों का प्रयोग है जो निम्नवत है–

खनिज रंगः– खनिज रंगों में पीला रंग– रामरजी रंग, लाल रंग– गेरूआ रंग, नीला– लाजवर्दी रंग, गहरा हरा– सब्ज, चमकदार, लाल– सिंगरफी रंग, पीला– हरतली रंग, भूरे रंग का प्रयोग हुआ है।

रासायनिक रंग :– रासायनिक रंग का इस प्रकार है– चमकदार पील– प्योड़ी का रंग, चमकदार लाल– सिन्दूरी रंग, काला – काजली रंग, सफेद– जस्ते का फूला आदि।

वनस्पतिक रंग :– नीला– नील पौधे का रस, लाल – महावर का रंग (चाकड़ या पीपल की छाल से निकाला गया रंग।

चित्रकार पैनल या फलक चित्रण के लिए कुछ ऐसे रंग लेते थे जो रसायन बेचने वालों के द्वारा बनाये जाते थे और कुछ खनिज रंग खदानों से प्राप्त होते थे। इस प्रकार टेम्परा चित्रण कार्य के लिये रासायनिक, वनस्पतिक एवं खनिज रंगों के सारे पदार्थ उत्तम होते हैं, केवल सफेद रंग जो दीवारों पर लगाया जाता है उसको बुझे हुये चूने से बनाते हैं क्योंकि यह बहुत शक्तिशाली होता है। इस प्रकार के रंगों के माध्यम से चित्रकार जो चित्र बनाते थे, उनको ये टेम्परा चित्रण के नाम से पुकारते थे। नीले रंग को बनाने के लिये विशेष सावधानी रखी जाती थी और नीले रंग को भेड़ या बकरी की चमड़ी के सरेस में मिश्रित किया जाता था, क्योंकि अण्डे की जर्दी के पीलेपन से नीला रंग हरा हो जाता है जबकि सरेस तथा गोंद रंगों की रंगत एवं चमक को प्रभावित नहीं करते हैं। टेम्परा चित्रण माध्यम में हर प्रकार के रंगों का प्रयोग किया जा सकता है और चित्रण के लिये बनाई गयी भूमि या बिना बनाई गयी भूमि पर टेम्परा माध्यम का प्रयोग किया जा सकता है और टेम्परा चित्र बहुत स्थाई होते हैं। टेम्परा की तुलना में फ्रेस्को पद्धति लोकप्रियता में कभी भी टेम्परा पद्धति का उल्घंन नहीं कर सकी, क्योकि फ्रेस्को पद्धति का चित्रण केवल ताजे प्लास्टर पर ही किया जाता है, जबकि चित्रकार को प्रायः बहुत पहले से प्लास्टर की हुई दीवारों पर चित्रण करना पड़ता है पहले से प्लास्टर की गई दीवार से पुराना प्लास्टर हटाकर और ताजा प्लास्टर लगाकर ही फ्रेस्को पद्धति का चित्रण किया जा सकता है, परन्तु टेम्परा चित्रण पुराने प्लास्टर पर किया जा सकता है, और इस प्रकार इसमें आर्थिक दृष्टि से खर्च कम होता है और श्रम भी कम लगता है।

टेम्परा चित्रण पद्धति भित्ति चित्रण अथवा फलक – चित्रण में इसी प्रकार अपनाई जाती है, भित्ति के समान फलक की भूमि पर अस्तर चाहे लगाया गया हो अथवा नहीं लगाया हो तो भी टेम्परा चित्रण उस पर किया जा सकता है। भित्तियाँ जब सूख जाती हैं तब उन पर सरेस के घोल की एक या दो पतली वाश लगा दी जाती है और उसके ऊपर सरेस मे मिश्रित रंगों से सारे चित्र को बनाकर पूर्ण किया जाता है। प्राचीन मिस्त्र मे काष्ठ फलकों पर इस प्रकार का सरेस का अस्तर लगाकर ऊपर से टेम्परा चित्र बनाने की प्रथा प्रचलित थी। टेम्परा चित्र आज भी सैकड़ों वर्षों के पश्चात् भी पूर्ण सुन्दरता और रंगों की ताजगी के साथ यूरोप और भारत में सुरक्षित है। इटली के महान चित्रकार जियतों के फलक चित्र आज भी लगभग चार सौ वर्ष के पश्चात सुरिक्षत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.एस0 के0 शर्मा, आर0 ए0 अग्रवाल – रूपप्रद कला के मूलाधार
2.वासुदेव शरण अग्रवाल – भारतीय कला
3.डॉ0 रीता प्रताप – भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास
4.डॉ0 अविनाश बहादुर वर्मा – कला एवं तकनीक एवं अमित वर्मा